त्रैमासिक अंक : 14 वर्ष 2017 : आईएसएसएन : 2348-8662
अप्रैल-जून

वाद संवाद

साहित्य, समाज और संस्कृति की पत्रिका

प्रधान संपादक
डॉ. राम रतन प्रसाद

Impact factor = 7.5

वाद संवाद

आई. एस. एस. एन.
2348 – 8662

शोध विषयक अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार की ओर से भेंट

अंक-14
अप्रैल-जून, 2017

स्वाक्षर

नई दिल्ली (भारत)

ISSN : 2348 – 8662

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार की ओर से भेंट

अनुक्रम

संपादकीय (iii)

1. रेणु के कथासाहित्य में महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी – डॉ. राम रतन प्रसाद 7
2. रमेश उपाध्याय का कथा शिल्प – डॉ. अंजली कायस्था 11
3. डॉ. किशोरीलाल व्यास नीलकंठ के 'गंगावतरण' में पर्यावरण विमर्श – सविना वी. 14
4. उषा प्रियंवदा की कहानियों में स्त्री अस्मिता – डॉ. वंदना 18
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी की सूर-संबंधी आलोचना – शीतल कुमारी 24
6. क्षमा शर्मा की कहानियों में स्त्री विमर्श – निधि मिश्रा 28
7. गहरी मानवीय संवेदना के कवि : जितेंद्र श्रीवास्तव – भावना सरोहा 34
8. आलमशाह खान की कहानियों में स्त्री पुरुष सम्बन्ध – डॉ. हंसराज चौहान 41
9. चंबा का जनजीवन और लोक संस्कृति – डॉ. प्रिया शर्मा 45
10. कथालेखिका चित्रा मुद्गल – डॉ. अनिता कुमारी 51
11. हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी अस्मिता – रामचन्द्र मीना 55
12. तुलसी नारी संदर्भ – दुर्गा प्रसाद 58
13. बाजद अनहद ढोल में आदिवासियों का शोषण और संघर्ष – प्रवीण 61
14. रागात्मक संबंध और लीलाधर मंडलोई – विकाश कुमार यादव 64
15. इकबाल खुदी एवं राजनीतिक चिंतन – अर्धेंदु 68

NSL/ ISSN/ INF/2014/864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

चंबा का जनजीवन और लोक संस्कृति

– डॉ. प्रिया शर्मा

किसी भी क्षेत्र के जन-जीवन और संस्कृति पहचान को रेखांकित करने के लिए विभिन्न पहलुओं से लोक के गहन और विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता होती है। लोक संस्कृति विभिन्न रूपों में हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। मौखिक परंपरा में प्रवाहित साहित्य लोक संस्कृति का मुख्य अंग है। संस्कृति का संबंध मानव की बौद्धिक और मानसिक अनुभूतियों से है। मानव के संस्कारों से ही संस्कृति बनती है। "जीवन की गति संस्कृति की जन्मदात्री है।"[1] संस्कृति में समय-समय पर जो परिवर्तन एवं परिवर्धन होते हैं, वे स्मृति पर आधारित हैं। "हमारे शरीर में कए प्रकार के कण होते हैं, जिनमें स्मृति रहती है, यही स्मृति संस्कृति कहलाती है।"[2] आज के वैश्विक परिदृश्य में औद्योगिकीकरण, मशीनीकरण और संचार संसाधनों ने समूचे विश्व के सामाजिक समीकरणों को प्रभावित किया है। भमंडलीय स्तर पर मुक्त बाजार व्यवस्था के संदर्भ में लोकसंस्कृति की परिभाषा बदल रही है। व्यवहारिकता और व्यवसायिकता की दौड़ में आत्म विकास की भावना घर कर गई है।

व्यक्ति तो उचित-अनुचित, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का बोध कराने के लिए समाज में कुछ विधि-विधान होते है, जो धर्म का सामाजिक रूप कहलाते हैं। "सोच समझकर बनाए नियमों के अनुसार संगठित रूप से चलने वाला समाज कहलाता है।"[3] भौगोलिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से चंबा की लोक संस्कृति में गद्दी जनजाति का सांस्कृतिक अध्यय कठिन विषय है क्योंकि सर्दियों में ये लोग मैदानी इलाकों में आ जाते हैं। गद्दी ट्रैवलर है, जहाँ जाते हैं, वहीं उनका घर होता है। मनुष्य को सामाजिक प्राणी होने के नाते ऐसी व्यवस्था निर्मित करनी पड़ती है जिससे समाज का वजूद बना रहे। महानगरों में दो-चार फ्लैट, गाड़ी, बंगला, धन-सम्पत्ति को प्रोपर्टी कहते है, परंतु गद्दियों का वास्तविक धन ये मेमने, भेड़ और बकरियाँ हैं। महानगरों में दाम्पत्य संबंधों में तनाव और अविश्वास घर कर गया है, रिश्ते टूट रहे हैं। कितनी अजीबोगरीब बात है कि एक तरफ आज के अधिकतर नवदंपति संतानहीन जीवन का उपभोग करके हरेक क्षण को ऐशो-आराम और मनोरंजनपूर्ण बनाना चाहते हैं, बाध्यता यह भी है कि उन्हें पेशे और व्यवसाय से फुरसत भी सुलभ नहीं होती। कोख भाड़े में देने और लेने की सरोगेट मदर परंपरा भी लोकप्रिय होती जा रही है। चंबा का गडरिया मेमने को गोद में लेकर भेड़ें चराता हुआ अपनी पत्नी को याद कर रहा है। जिससे बिछुड़े हुए उसे कई महीने हो चुके हैं। उधर गाँव में पत्नी भी उसे याद करते हुए यह गीत गुनगुनाती है–

"घरा जो तू ईयां बो जानी घरा जो तू ईयां बो....ओ"[4]

• सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, दयाल सिंह कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली